तृतीय लिंगी समाज की उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ

शोध सारांश

शिक्षा के बिना किसी भी व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र का समुचित विकास नहीं हो सकता।अतः अशिक्षित होने के कारण इन्हें रोजगार, आवास तथा स्वास्थ्य संबंधित सेवाओं तक पहुंचने में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।आज समाज में कई तृतीय लिंगी जीवन की तमाम बाधाओं को पार करते हुए सफलता की उड़ान भर रहे है।मनोरंजन की वस्तु समझे जाने वाले समाज ने आज अपनी प्रतिभा के दम पर सफलता की बुलंदियों को छू लिया है किन्तु समाज में समान अधिकार प्राप्त करके सम्मान के साथ स्वतंत्रता पूर्वक जीवन जीने का सपना उनका आज भी अधूरा है।

वर्तमान परिदृश्य में तृतीय लिंगी समुदाय समाज के मध्य अपनी पहचान स्थापित करने में संघर्षरत है।संवैधानिक दृष्टिकोण से तृतीय लिंग का दर्जा तो मिल गया किन्तु लोगों की मानसिकता में आज भी वे ताली पीटकर बधाई मांगने वालों की श्रेणी में ही शामिल होते है।शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होने के बावजूद लोगों ने उन्हें समाज व राष्ट्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने का कभी अवसर प्रदान ही नहीं किया या यूं कहा जाये कि उन्हें इस योग्य ही नहीं समझा।

बचपन में दादी–नानी से परियों की कहानियों के साथ इस तृतीय लिंगी समुदाय के अस्तित्व से बच्चों को रूबरू करवाया गया होता तो शायद किसी किन्नर को शिक्षा के मंदिर में भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ता।अधिकांश किन्नर लोगों द्वारा होते इस भेदभावपूर्ण रवैये के कारण अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ देते है।आवश्यक कौशल एवं प्रतिभा के अभाव में रोजगार मिलने में इन्हें बेहद कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।केवल किन्नर होने के कारण उन्हें अन्य कार्य–दायित्वों से वंचित रखा जाए यह कहाँ का न्याय है?क्या उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने का भी अधिकार नहीं है और अगर है तो माता–पिता उन्हें उनके स्वभाव से विपरीत जीवन जीने के लिए बाध्य क्यों करते है?संविधान भी प्रत्येक व्यक्ति को निजता का अधिकार प्रदान करता है तो किन्नर समाज अपने इस अधिकार से वंचित क्यों है?

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जी किन्नर समुदाय के लोगों को भी समाज के लोगों के साथ घुलने मिलने के लिए कहती है जिससे वे समाज की मुख्यधारा में आसानी से शामिल हो सके– "इन हिजड़ों से मैं बार–बार कहती हूँ कि समाज का हमें देखने का जो नजरिया है, उसके लिए हम भी जिम्मेदार हैं।समाज में घुल–मिल जाओ, उनसे बात करो फिर देखो, ये नजरिया बदलता है या नहीं।"[1]

मनीषा महंत जी अपने एक साक्षात्कार में कहती है कि एक किन्नर की पीड़ा को एक किन्नर ही समझ सकता है – "हर किन्नर उस स्थिति से गुजर चुका होता है जिस स्थिति से आज कोई किन्नर गुजर रहा है, एक रोगी का दर्द तो दूसरा रोगी ही समझ सकता है।किसी महिला–पुरुष को अगर वो अपने दिल की बात बताए तो भी बताए कैसे? ये महिला–पुरुष प्रधान समाज किन्नरों को हेय या घृणा की दृष्टि से देखता है, उनको किन्नरों की उपस्थिति ही समाज में पसंद नहीं तो वो क्या समझेंगे।"2

बदलते वक्त के साथ किन्नरों ने अपने अधिकारों को जाना।वे सामाजिक रुढियों को तोड़कर शिक्षा से लेकर राजनीति तक सभी क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल कर रहे है तथा समाज के मध्य अपनी अलग छवि स्थापित कर रहे है।तमिलनाडु की सत्यश्री शर्मिला ने समाज में अत्याचार के विरुद्ध लड़ने के लिए वकालत की उपाधि प्राप्त की।शिक्षा के क्षेत्र में अग्रिम रहने वाले स्थान से आने के बावजूद उन्हें अपने जीवन में लैंगिक विकलांगता के कारण कई मुश्किलों को सामना करना पड़ा।इन संघर्षों एवं परिश्रमों का परिणाम यह निकला कि वे देश की प्रथम ट्रांसजेंडर वकील बनकर सबके समक्ष प्रस्तुत हुई।तमिलनाडु की पहली ट्रांसजेंडर पुलिस अधिकारी पृथिका यशिनी है।इनके माता–पिता इन्हें ठीक करवाने के उद्देश्य से मंदिरों, डॉक्टरों, ज्योतिषियों के पास ले गए।इनका बचपन भी संघर्षमय रहा।

इसी श्रेणी में भारत की प्रथम ट्रांसजेंडर जज जोयिता मंडल आती है।जिन्हें ट्रांसजेंडर होने के कारण अपने जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा किन्तु उन्होंने इन मुसीबतों का डटकर सामना किया।इनका यह संघर्ष न केवल किन्नर समाज के लिए बल्कि सभी के लिए एक प्रेरणा है।शरीर से पुरुष एवं स्वभाव से स्त्री होने के कारण परिवार द्वारा शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना मिली।शिक्षा के मंदिर में भी भेदभाव किया गया एवं इनका उपहास बनाया गया।परेशान होकर उन्होंने घर छोड़ दिया एवं रहने का ठिकाना न होने पर राते स्टेशन एवं बस अड्डे पर गुजारी।जोयिता 2010 से ही ट्रांसजेंडर समुदाय के उत्थान के लिए तथा उनके अधिकारों के लिए कार्य कर रही है।उन्होंने रेड लाइट में रहने वाली महिलाओं एवं उनके बच्चों के लिए राशन कार्ड तथा आधार कार्ड बनवाए तथा उन्हें शिक्षा के लिए भी जागरूक किया।29 वर्ष के आयु में ये 8 जुलाई 2017 के दिन पश्चिम बंगाल की लोक अदालत में प्रथम ट्रांसजेंडर जज की तौर पर नियुक्त की गई।

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर ख़ुशी शेख ट्रांसजेंडर समुदाय का हिस्सा होते हुए भी आज किसी पहचान की मोहताज नहीं है।स्कूल से निकाल दिए जाने के पश्चात जीवन में कई प्रकार के उतार–चढाव देखे और इन संकटों ने इन्हें लक्ष्य प्राप्त करने के लिए और मजबूती प्रदान की।जीवन में कुछ अलग कर दिखाने की चाहत ने उन्हें भारत की प्रथम ट्रांसजेंडर मॉडल बनाया।इन्हीं में काजल मंगलमुखी भी अपने समाज के प्रति सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों में जागृति लाने का प्रयास कर रही है।सूरत की नूरी कुंवर भी न केवल किन्नर समाज के लिए

अपितु संपूर्ण समाज के हित के लिए कार्यरत है।सूरत की नूरी कुंवर प्रत्येक क्षेत्रों में हर वह कार्य करने के लिए तैयार रहती है जिससे समाज का कल्याण हो।

शिक्षा अधूरी रह जाने के बावजूद भी कई भाषाओँ का ज्ञान होना यह दर्शाता है कि किन्नरों की शिक्षा के प्रति रूचि कितनी अधिक है।परिवार का समर्थन न मिल पाने के कारण ये शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते।इनमें देश की पहली किन्नर विधायक शबनम मौसी जिन्हें 12 भाषाओँ का ज्ञान था।कोलकाता में रहने वाली जिया दास भारत की पहली ऑपरेशन थिएटर टेक्नीशियन बनी।शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा तृतीय लिंगी अपने जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला सकते है।आज कई ऐसे तृतीय लिंगी है जिन्होंने अपनी पहचान को शर्म की वजह न बनाकर अपने जीवन की तमाम चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया और अपने लक्ष्य को हासिल किया।झारखंड–बिहार में अमीर महतो नामक ट्रांसजेंडर सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारी (सीएचओ) बनी।भारत की प्रथम फोटो जर्नलिस्ट जोया लोबो कहती है– "LGBTQI समुदाय के लोग शराब, ड्रग्स आदि का नशा करने लगते हैं...असल में अगर फैमिली स्वीकार करेगी, तभी किसी व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार मिल पाएगा पर हमें न परिवार से प्यार मिलता है, न सोसायटी से सम्मान।यही वजह है कि हमारे समुदाय के बहुत सारे लोग नशा करते है।"[3]

आज देश में ट्रांसजेंडर युगल न केवल विवाह कर रहे है बल्कि मेडिकल साइंस की सहायता से बच्चों को जन्म भी दे रहे है।इसमें केरल के जिया पावल एवं जहाद ऐसे ट्रांसजेंडर युगल है जिन्होंने एक बच्चे को जन्म दिया।ऐसे विवाहों को समाज धीरे–धीरे ही सही पर अपनी स्वीकृति प्रदान करने लगा है।समाज में कई ऐसे भी किन्नर है जिन्होंने अनाथ बच्चों को गोद लिया है तथा वे उन्हें उज्जवल भविष्य देने का प्रयास कर रहे है।गौरी सावंत जी आज एक जाना माना नाम है।जिन पर ताली नामक वेबसीरीज भी बन चुकी है।उन्होंने गायत्री की माता के गुजरने के पश्चात न केवल उसे परिवार द्वारा सोनागाछी बेचने से बचाया बल्कि उसके लालन–पालन की जिम्मेदारी भी ली।जिस समाज ने किन्नरों को सदैव दुत्कारा, अपमान किया, गौरी ने उसी समाज की बच्ची को न केवल बचाया बल्कि उसे अपनाया।क्या कभी हमारे समाज के लोगों ने कभी किसी ट्रांसजेंडर बच्चे को गोद लेकर उसके जीवन को सही दिशा देने का विचार किया होगा? जवाब है नहीं।किन्नर सरकार एवं समाज से अपने लिए कुछ विशेष नहीं चाहते बल्कि आम नागरिकों को मिलने वाली बुनियादी सुविधाएँ चाहते है।

पद्मिनी प्रकाश जो कि देश की पहली ट्रांसजेंडर न्यूज़ एंकर है उन्होंने समाज की क्रूरता एवं विद्रूपता के समक्ष अपने सपनों को मरने नहीं दिया और मुश्किलों भरी एक कठिन यात्रा तय की।माता–पिता द्वारा त्याग दिए जाने पर अपने जीवन का अंत तक करने का प्रयास किया।समाज में कई ऐसे किन्नर मौजूद है जो सामाजिक अस्वीकृति के कारण अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित नहीं कर पाते।कुछ की स्थिति इतनी बद्दतर है कि महज 50–100 रूपये के लिए वे देह व्यापार करने या सड़कों पर भीख मांगने के लिए विवश है।किन्नरों के साथ होते दुर्व्यवहार को निर्मला भुराड़िया जी ने अपने उपन्यास 'गुलाममंडी' में रानी के द्वारा वर्णित किया है– "मुझ

एक को छोड़ सब पूरे थे।मेरी दाढ़ी–मूंछ नहीं निकले।आवाज छोरियों जैसी रह गई तो सब मेरे को मारते–चिढ़ाते–खिजाते थे।बाप भी देखो, तब हाथ छोड़ देता था।लोगों के घर बर्तन मांजने गई तो बोले, हिजड़े से बर्तन मंजवाएंगे क्या?मैंने कह दिया...से बर्तन थोड़ी मांजते हैं, मांजते तो हाथ से ही हैं न।तो घराती ने थाने में रिपोर्ट कर दी कि हिजड़ाघर औरतों को छेड़ रहा है।अश्लील बातें कर रहा है।पुलिस मुझे पकड़कर ले गई।मारा भी और रेप भी किया।अब पूछो कानून के रखवालों से, भला हिजड़ों को पुरुष थाने में क्यों भेजते हैं।नहीं तो बनाए तीसरा थाना।"[4] वर्तमान समय में सरकारों को किन्नरों की समस्याओं के समाधान हेतु अलग से थाना प्रकोष्ट स्थापित करने के आदेश दिए गए है।

देश की प्रथम ट्रांसजेंडर सिविल सेवक ऐश्वर्या ऋतुपर्णा प्रधान ओडिशा के कंधमाल जिले के एक गांव कतिबागेरी से है।ये ऐसी शख्सियत है जिन्होंने सामाजिक रुढ़िवादी मानसिकता को दरकिनार करते हुए अपने सपनों को महत्व दिया।विद्यालय में अपनी टीचर से अपमानित हुई।कॉलेज होस्टल में दोस्तों द्वारा यौन शोषण जैसी घटना के कारण उन्हें मेंटल ट्रामा से बाहर आने के लिए कठिन सफ़र तय करना पड़ा।किन्नर समाज को तृतीय लिंग का दर्जा मिलने के उपरांत इन्होंने कानूनन रूप से अपना लिंग बदलने का निर्णय लिया।आम तौर ऐसे बच्चों को सबसे ज्यादा बाल्यवस्था में ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है।शिक्षक सहयोग करने के स्थान पर अपमानित करने लगते है जिससे ऐसे बच्चों का मनोबल टूट जाता है।

समाज में अधिक जागृति लाने के लिए सरकार को अधिक से अधिक कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।तृतीय लिंगी समाज के उत्थान के लिए बने वेलफेयर बोर्ड को इनकी और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।संवैधानिक मान्यता मिलने के बावजूद भी बड़े स्तर पर इन्हें अपनी योग्यता प्रमाणित करने के अवसर प्राप्त नहीं हुए।रोजगार हेतु विभिन्न क्षेत्रों में तृतीय लिंगी समुदाय हेतु पद आरक्षित किए जाने पर जोर देना चाहिए।इससे न केवल ये विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करेंगे बल्कि किन्नरों के प्रति समाज का नजरिया भी बदलेगा।

संदर्भ–ग्रंथ

1. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी..., वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं–08
2. https://www.humrang.com/humrang/100247/%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%81_%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%82_%E0%A4%95%E0%A4%BF
3. https://www.healthshots.com/hindi/she-slays/we-need-your-emotional-support-not-your-finances-transgender-photojournalist-zoya-thomas-lobo/
4. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं–71

क्षत्रिय दीपिका जितेन्द्र

पीएच.डी शोधार्थी

श्री गोविंद गुरु विश्वविद्यालय, गोधरा (गुजरात)